(1)

श्रीरामचंद्रायनमः॥ जाहलियाजननिवृत्ति॥ पूर्वप्राप्तमध्य 1/13
राति॥ कैकईयेउनिपरयाप्रति॥ बोलेउपपलितें आईका॥
श्लोक॥ कैकयोवाच॥ उत्थापयंतिकैकेयीपुत्रंवचनमब्र
वीत्॥ उत्तिष्ठपुत्रभद्रंतेराजपुत्रनिबोधमे॥१॥ तद्विधानैर्व
शीभूतंलिसत्तांदसीसंमता॥ स्वहमेदंस्वकंराज्यसफलंकु
रुमेश्रमं॥२॥ मनोनदि[illegible]त्राणांममचामित्रकर्षणं॥
३॥ मुपुसीघ्रंविधिवंनुम[illegible]यंपैर्विर्वशिष्टप्रमुखैःसमेस
सकृत्यराजानमनंतरंसमालानमेवाभिषेचनस्वय॥
३॥ टीका॥ उठउनियापुत्रासि॥ कैकयिबुद्धिसांगेत्यासि॥
रामगेलावनवासासि॥ तुंकांकरिसिशोकत्याच्या॥२॥
रांडवेबाईलेच्यापरि॥ रडलानलजेसिसभेमाझारी॥

2

निज

उठिवेगीचीरूधरि ॥ अयोध्येचे करि निजराज्य ॥ ३ ॥ मुख्य जे
ष्टाचे जैं राज्य ॥ तें म्यासंकटि साधिलें तुज ॥ से खितु जमाझि
न मने वोज ॥ नाच्यसि भोजवना जाव्या ॥ ४ ॥ आयुष्य सरल्या
नि मालापिला ॥ पिलृ आज्ञा वनवास रघुनाथा ॥ तो दोष
घातिली माझे माथा ॥ निज स्वार्थानें पापि ॥ ५ ॥ मुळि ल्लागुनि
संसारी ॥ सापलतें तवं मुख्य वैरी ॥ तें तुज सांगेन निर्धारी ॥
१ वेदशास्त्रीं संमत ॥ ६ ॥ दिति अदिति दोघी सवति ॥ येकापि १
त्याचि संतति ॥ देवा दैत्यां वैर प्राप्ति ॥ निज घातियेरयेरां ॥ ७ ॥
ये स्वअर्थी चिवेदोक्ति ॥ बृहदारण्यप्रथमस्कलि ॥ देवदैत्य
वैरी होति ॥ स्कलि संमति अवधारी ॥ ८ ॥ स्कलि ॥ द्वयाह प्रा
जापत्या देवाश्चासुराश्च ततः ॥ कानियसा एव देवा ज्यायस

सा आसुराल्लए षु लोकेष्वस्पर्द्धंतं ॥ ७ ॥ टीका ॥ सापत्ना
माजि आलि प्रिलि ॥ कहिंच नाहि वेदशास्त्रार्थि ॥ गरुडसर्पा
वैर प्राप्ति ॥ ते कायपन्न व्हेलि निजबंधु ॥ ९ ॥ ऐक माझ्नि निज
युक्ति ॥ तुं वानव जावें वनाप्र[illegible] ॥ आपणुनि वशिष्टादि ऋषि
पंक्ति ॥ घेई राज्यप्राप्ति ज[illegible]कु ॥ १० ॥ भरथा तुं तवं साम्रा
ज्य पूर्ण ॥ भाग्यें वनवासा [illegible] लक्ष्मण ॥ तो जरि येथें अ
सतां जाण ॥ करितां क[illegible]ज्य लोभ ॥ ११ ॥ मिं सांगते हि
तदे खान ॥ तुं होई मुख्य राजा पूर्ण ॥ युवराजा करि शत्रुघ्न ॥
मासें वचन प्रतिपाळि ॥ १२ ॥ ऐकोन मातेचे वचन ॥ भरथा
कोपु आला संपूर्ण ॥ कोपा माजि आलें रूदन ॥ जालि उद्वि
ग्न अनुतापि ॥ १३ ॥ धाया करि हाणि जे लाता ॥ तै सापाडु

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

3

जाला भरथा ॥ तुं लवं न व्हसि मासि माला ॥ पाप रूप पलालुं पू
र्ण ॥ १४ ॥ निजपति निमाल्याचे तुज ॥ अणु मात्र दुःख ना
लाज ॥ राज्य भोगाचे सुख भोज ॥ जालि निर्लज्ज नाचसि ॥
॥ १५ ॥ तुं स्याऐ कोन वचनार्था ॥ म्या देषावें रघुनाथा ॥ स्व
२ जनि देखोनि दुःखावर्ता ॥ नरक पाताळ खये जावें ॥ १६ ॥ नि
ज मातेचे हितोप वाक्य ॥ [illegible] जावें अवश्यक ॥ पूर्वे जन २
र कान्यानें देख ॥ घालें दुःख जगासि ॥ १७ ॥ निजपतिचि
घात किनी ॥ श्रीराम दे[illegible]ज णि ॥ सुहृद सुखा दुः
ख खाणि ॥ निघ पापिणी जालि निंद्ये ॥ १८ ॥ जळो तुसें काळें
मुख ॥ श्रीराम सुखादि घलें दुःख ॥ तुसे मज नाहि गे सु
ख ॥ जगासि असुख तुसेनि ॥ १९ ॥ वधु नये निजमाता ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

३४

याला गिचु कलि सघाला ॥ तुसे नि मज दुःखावस्था ॥ श्रीर
घुनाथा नि घडिले ॥ २० ॥ तु जसि पाहाता सन्मुख ॥ मज दा
टले परम दुःख ॥ नको दाउं काळे मुख ॥ निघ निःशंख ज
ति दुष्टे ॥ २१ ॥ भरथे कोपोनि या पारी ॥ निर्भछुनि नाना प
री ॥ कैकपि घाललि बाहेरी ॥ तिचे निकरी अति दुःखि ॥
२२ ॥ जिचे निअंतर त्यागावे ॥ ते माता न व्हे माहा लाव ॥
ज गिनि घई चे नाव ॥ दुःख वालिन केकपि ॥ २३ ॥ श्रीराम
भरथा पिंड येक ॥ येकापिंड आपे दोघें देख ॥ येर येराचे न
मनिति दुःख ॥ परम सुख येर येरा ॥ २४ ॥ येर येराचा जिउ
प्राण ॥ येर येराचे निज जीवन ॥ येर येरा समाधान ॥ सुख
संपन्न रामे भरथु ॥ २५ ॥ भरथासि श्रीरामाचे सुख ॥ श्रीरा

(६)

भा भरथाचा हरिखा ॥ येकमेकां दोघे येक ॥ कैकयि सुखि
हें नेणे ॥ २६ ॥ आवलिला श्रीरघुनाथ ॥ परम सुखें सुखावें
भरत ॥ नाहि राज्यभोगाच्या स्वार्थ ॥ परमामृत श्रीराम ॥ २७
श्रीरामाच्या पायापरतें ॥ परम सुख नाहि भरथाते ॥ यालागि
ने घोलि निज राज्याते ॥ श्रीरामाते निटोरिचें ॥ २८ ॥ देवादेसा
वैर विलंड ॥ त्याच्या नव्हे येकपिंड ॥ राज्यलोभें दुःख उदंड ॥
वैर अखंड येर येरां ॥ २९ ॥ भिन्न पिंडे निज उसलि ॥ ग
रूड सर्पा वैर प्राप्ति ॥ तैसें नाहि श्रीराम भरथिं ॥ चौघे होलि
येकपिंड ॥ ३० ॥ सुमेत्र भरथ आणि शत्रुघ्न ॥ चौघा जा
णा रघुनंदन ॥ च्याह्री मूर्त्ति श्रीराम पूर्ण ॥ व्युह्रु संपूर्णया
नावें ॥ ३१ ॥ चौघें बंधु भिन्न भिन्न व्यक्ति ॥ च्याह्री मिळोनि

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

58

श्रीराममूर्त्ति ॥ व्यूहचतुष्टय यातें लक्षणाति ॥ आगमार्थि वेदो
क्त ॥ ३२ ॥ ऐसिं या एकाल लाअलिप्रीति ॥ भेटो पाहे श्रीराममू
र्त्ति ॥ उदया येतां चि गोमलि ॥ निजगमनार्थि उघतु ॥ ३३ ॥ पा
चारुनि याप्रधाना ॥ वेगीं सन्नद्ध करा विसेना ॥ भेटावया रघु
नंदना ॥ जाणें वनानि [illegible] ॥ वशिष्ठ येउनि आपण ॥
पाहावया भरथाचें मन ॥ [illegible] धर्माचें लक्षण ॥ निजवचन
बोललु ॥ ३५ ॥ तुह्मी तंवं [illegible] पितृभक्त ॥ आज्ञा नेघुनि गे
ला दशरथ ॥ राजीं अभिषेक का वा भरथ ॥ श्रीरघुनाथ वन
वासि ॥ ३६ ॥ तुह्मे मातेचे वरदान ॥ तिचेंहिं मागणें हें चि जाण ॥
भरथा राज्याभिषेचन ॥ रघुनंदन वनवासि ॥ ३७ ॥ श्रीरा
मपितृवचन निश्चासि ॥ वेगें गेला वनवासासि ॥ तुं हि पाळि

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(5)

पितृवाक्यासि ॥ अभिषेकासि अंगिकारि ॥ ३८ ॥ श्रीराम अ
भिषेकाव्यावरि ॥ पूर्वि केलि होति सामग्रि ॥ ते सिद्ध आहे मा
साघरी ॥ तुं अंगिकारि अभिषेकु ॥ ३९ ॥ पितृवचन उलं
घिलों ॥ अवश्य पावि जे नरकपात ॥ आघ्रान करावा पारथ्या ॥
तुज मिं आतां अभिषेकिन ॥ ४० ॥ आई कोन वशिष्टाचे वच
८ न ॥ भरथ पडला मुर्छापन्न ॥ दीर्घ मांडिले रूदन ॥ आक्रंदे पू
र्णबोलतु ॥ ४१ ॥ कैकयि पि[illegible]र [illegible] जालि रांड ॥ जळो तिचे का
ळे तोंड ॥ वनवासाचे पाखां[illegible] ॥ मा[illegible]लें वाढविले ॥ ४२ ॥ कै ८
कई केवळ पैं नष्ट ॥ आकांगा[illegible]लोपतिवरिष्ट ॥ तिचे मागपो
पापपष्ट ॥ तो राज्य पाट मि ने घें ॥ ४३ ॥ वशिष्टा तुज करितो न
मन ॥ किति पाहासि मा सेमन ॥ वाचुनिया रघुनंदन ॥ अभि
षेचन मि ने घे ॥ ४४ ॥ श्रीराम सांडुनिया वनि ॥ जरि बैसलो

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

ध्या

अभिषेचनि ॥ तरि मि जालों मद्यपानि ॥ मात्रागमनि अतिन
ष्ट ॥ ४५ ॥ तुझे शिवोनि याचरणा ॥ पूर्वि वायिली रामाचि आण ॥
तेचि मोक्ष अतिप्रमाण ॥ फुडलि आपण न फुसावें ॥ ४६ ॥ लवो
नि चरणी ठेविला माथा ॥ येथ्र निमाणुति गुरूनाथा ॥ राज्याभि
षेचनाचि हे कथा ॥ मज सर्वथा न पुसावि ॥ ४७ ॥ आइकोन भ
रथाचे वचन ॥ वशिष्ट ज्ञा[illegible] सुखसंपन्न ॥ हृदई धरिला
आळिंगुन ॥ अतिसन्मान[illegible]सि ॥ ४८ ॥ तुम्यासवें घेउनि
माता ॥ भेटि येई नमि रघुनाथा ॥ भरथें चरणि ठेविला माथा ॥
सभाग्यता आजि मासि ॥ ४९ ॥ सद्गुरू जाला सुप्रसन्न ॥ भर
थे त्राहाटिली निशान ॥ सेना संनद्ध करा पूर्ण ॥ शीघ्रगमन
वनवासा ॥ ५० ॥ हरिखे नाचतु भरथ ॥ आजि मि देखेन रघु

5A

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai joint project

6

नाथा॥ मासेफुरतिमनोरथ॥ रूलरूलार्थमिहोईन॥५१॥ श्री
रामाभेटावयातत्काळि॥ भरथनिघालासवेंदळि॥ नगरीहरि
खपिटटाळि॥ वनासकळिनिघावया॥५२॥ होईलश्रीरामद
रूषण॥ उदिमचालेलपूर्ण॥ उमयलाभिंगेउनमन॥ नि
घालेजनअयोध्येचे॥५३॥ श्लोक॥ पौराश्चनिर्ययुःसर्वे
५ समवायेननैगम॥ रामदर्शनसंहृष्टासर्वाःप्रकृतयस्तदा॥४॥ टीका॥
वाणीसिद्धकेलेप्रसारे॥ मोचलेसोनारजोसीवेव्हार॥ दुसी ५
दिंडेघेतलीथोर॥ गोळिकारेतापाटिली॥५४॥ चालि
ल्यापखानपरवडी॥ दहिदुधाच्याकावडी॥ तेलीघेतल्या
तेलाच्याजोडी॥ कापडघोडीचाव्यांचि॥५५॥ तांबोळिबांध
लीआदुकि॥ ब्राह्मणिबांधलिवेंदुगी॥ मायेबापानुपसत

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

वेगी॥ चोरु निमार्गि लागलीयेके॥५६॥ पुत्रालागीधांवे मा
ता॥ स्त्रि पुत्रालागि निघेपिला॥ पुतळ्यालागि धांवे चुलता॥
श्रीरघुनाथापाहावया॥५७॥ काडाईत भार वाहक॥ वोड
सिंपि नटनाटक॥ मणिकर जक नापिक॥ जळलारक निघा
ले॥५८॥ सुतार शस्त्रकार रजुकार॥ मार्गि विकरा होईल
अपार॥ घेउनि पाईत आमार॥ मोचि चांभार निघाले
॥५९॥ सकुटंब निघाले समस्त॥ काडे न मिळे देतां अर्थ॥ ये
क लपाति निघालरिल॥ दुरि परथ अंतरला॥६०॥ घरिं
रारवण नराहे कोण्ही॥ निघति येर येरा वरिरु सोनि॥ श्री
राम पाहावया नयनि॥ उल्हास मनि सर्वांचि॥६१॥ खराव
रि वळघोनि॥ हरिखे निघाल्या कुळाळपालि॥ श्रीरामदेखा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

नयानयनि ॥ आपमानसजुनि सुखेसाहति ॥ ६२ ॥ आवघिया
हिं पुढें ॥ झाडें करिनेले गाडे ॥ राजसटपाकलिबापुडे ॥ सा
(१) पासि झाडें जोडानया ॥ ६३ ॥ निघालें द्विजाचे संभार ॥ सन्या
सि चालिलें अपार ॥ नागिवे चालिले दिगंबर ॥ श्रीरामचंद्र
६ पाहावया ॥ ६४ ॥ श्लोक ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्तै मास्थाय स्यं
दनोत्तमं ॥ प्रययौ भरतः श्री[illegible] रामदर्शनकांक्षया ॥ ५ ॥ द
शनागसहस्राणि कल्पि[illegible] समाविधि ॥ षष्टिरथसहस्रा ६
णि धन्विनां विततायुधां ॥ [illegible] ॥ शतंन्याश्वसहस्राणि समारू
ढाणि राघवं ॥ अन्वयुर्भरतं तत्र प्रशांतमरिसूदनं ॥ ७ ॥
अग्रतः प्रययुश्चास्य सर्वे मंत्रिपुरोहिता ॥ अधिरुह्य ह
यैर्युक्तान् रथान्सूर्यरथोपमान् ॥ ८ ॥ टीका ॥ श्वेतवारुवी

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

पुष्प रथु ॥ त्यावरि हरि खैबैसे भरथु ॥ शत्रुघ्नेहि पेलिला रथु
॥ श्रीरघुनाथु देखावया ॥ ६५ ॥ पालखि माजि वाउनि ॥ कौश
ल्या सुमित्रा जननि ॥ निघाल्या येरिहिं राजपालि ॥ श्रीरामद
र्शनि उद्यत ॥ ६६ ॥ कैकयि नयेचि निःशंख ॥ तिसि लाजे नेप
रम दुःख ॥ राम नारावे ना [illegible] देख ॥ काळे मुख केवि दा
वि ॥ ६७ ॥ वशिष्ठादि ऋषी [illegible] ॥ प्रधान सुमंतादि समस्त ॥
त्यासि देउनि उत्तम रथ ॥ [illegible] नेत निघाले ॥ ६८ ॥ सौराष्ट्रीय
न भद्रजाति ॥ दाहा सहस्र उन्मत्त हस्ति ॥ घंटा घागरू ळी
भरथाच्या पताका बहु ति ॥ दोहि बाहि शोभति ॥ ६९ ॥ त्यालि रथि महा
रथी ॥ साटि सहस्र भूपति ॥ भरथापाठिसि चालिलि ॥ र
थ घड पडिलि सायुधि ॥ ७० ॥ रथाच्चिया गति विगुलि ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(8)

येकापरिस येकदाविलि ॥ स्यामाजि धनुष्याप्रि विस्तलि ॥ शा
स्त्र गालिसाटोपु ॥ ७१ ॥ शातसहस्त्र सु ज्ञालिवारू ॥ चालिला
निराश्या संभारू ॥ नाना अळंकारि मनोहरू ॥ करिति दुर्ध
र सिंहनादु ॥ ७२ ॥ कवच [illegible] प्रबळि ॥ कंगळटोप रापा
वळि ॥ पाखरा झळकति ते [illegible] ॥ वीर महाबळि आरूढ ॥
८ ७३ ॥ अनेक ज्ञालिचे अ[illegible] ॥ होहो मामा जीजी म्हण ८
ति ॥ दाउनि अंतराळ [illegible] ॥ [illegible]रूप थापटिति महा-चालु ये
॥ ७४ ॥ शूळ पट्टिश तोमर ॥ [illegible] सोळाचे डु चक्र ॥ गदा मु
द्गल लहुडी थोर ॥ आले मोगर पाईचे ॥ ७५ ॥ खेड झाले
जि अपार ॥ पिले घाति पाईचे धनुर्धर ॥ गर्जत आले फ
रशाधर ॥ माल दुर्धर लळपति ॥ ७६ ॥ सेलि साबाली शा

१

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

88

क्तियुक्त ॥ अलगाईत बाणाइत ॥ कोतेकार आति अतु
ल ॥ लघुहस्त लघुवेधि ॥ ७७ ॥ अढाऊ वों धडकिल ॥ लु डणे
लवेसामाजि तळपत ॥ हैकार थैकार दाविल ॥ वीर गर्ज
तपायांचे ॥ ७८ ॥ चालु रंगसेनासंभार ॥ राघवसैन्य अ
ति दुर्धर ॥ भारथ चाल्ले [illegible] ॥ जाला गजर वाघा
च्या ॥ ७९ ॥ कुऱ्हाडि कात्या [illegible] हल्लि ॥ भारापुढें गन छेदि
लि ॥ मालि कामिने पोकिलि [illegible] मिसजीलि चालाव्या ॥ ८० ॥
भार चालिला अति दुर्धर ॥ [illegible] किले भागिर थिलीर ॥ दे
खोन भार थाच्या भार ॥ गुह्यक थोर क्षोभला ॥ ८१ ॥ कैसा
राज्य लोभ दुर्धर ॥ सख्याबंधु पडिले वैर ॥ भार थे सजु
नि याभार ॥ श्रीरामचंद्र मारू जालो ॥ ८२ ॥ मासा स्वामि

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai : Joint project of the

(९)

रघुनाथ ॥ त्याचा करूं पाहे घात ॥ रणिं भांडिन भरथ ॥
सैन्यसमस्त छेदिन ॥ ८७ ॥ श्लोक ॥ गुह्योक्ति ॥ अहं सौदाशरथि
रामं पिताप्रव्राजितं वनं ॥ सा माता यो राज्यलोभेन हंतुं भरत
मुद्यतः ॥ ९ ॥ मम दाशरथी रामो भर्ता बंधु सुहृद्गुरू ॥ अहं
८ तस्य हितार्थं च करिष्यामि सुदुष्करे ॥ १० ॥ अद्य मे शरसं
घातो मत्कार्मुकविनिः[illegible]ः पतिष्यति गात्रेषु नराश्व ८
गजयोधिशु ॥ ११ ॥ नि[illegible]सेनां सवाजिरथकुंज
रा ॥ तां च भूमिं करिष्यामि [illegible]ः शोणितकर्दमां ॥ १२ ॥ टी
का ॥ श्रीराम माझा माता पिता ॥ श्रीराम माझा सुहृद भर्ता ॥
श्रीराम सद्गुरू निजात्मता ॥ श्रीराम तात भ्राता माझा ॥
८८ ॥ त्याचा करावया घातु ॥ ससैन्येसि जातु सभरथु ॥

" Joint project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

१४

याच्या करिन मि निःपातु ॥ राम भक्तु तैसय ॥ ८५ ॥ मिं श्री
रामाच्या मेटकरी ॥ वेविलो असे गंगातिरी ॥ भरथ येथुनि
के शापरि ॥ परतोरि उलरेल ॥ ८६ ॥ निशादासि सांगे गुह
क ॥ आले भरथ सैन्य असंख्य ॥ ते लगे राखावे गंगा तटा
क ॥ गंगोदक शिवो नेदि ॥ ८७ ॥ हे जवं आले कुद्धासि ॥ तरि
मि युद्ध करिन लपासि ॥ [illegible]कुडा कृतघ्न पृथ्विसि ॥ क्षण
धे सि करीन ॥ ८८ ॥ मारीन [illegible]थ वाजि कुंजर ॥ अपार पा
डिन नरवीर ॥ वाहलि अ[illegible]चे पुर ॥ तैसे क्षेत्र करिन ॥
८९ ॥ श्रीरामाच्या निज कार्यार्थि ॥ निःशेष वेचिन जिविता ॥
येथुनि या पुढें भरथा ॥ सत्य सर्वथा जावो नेदि ॥ ९० ॥
निघडे निशाद निशंक ॥ मेळउनि निज कटक ॥ सन्नद्ध
बद्ध सवे गुहक ॥ सैन्यासन्मुख पैं आला ॥ ९१ ॥ भर

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

१०

थ्यासांगतिसैन्यकु॥ युद्धासिआलाअसे गुहकु॥ धरून
गंगेचेतटाकु॥ गंगोदकुसिबोंनेदि॥ ९२॥ राजानिमाला
निशोकु॥ आलासिपारिकाजालागुह्यकु॥ लाहानाफु
टतालिलोकु॥ गंगोदकुसिबोंनेदि॥ ९३॥ गुह्यकबापु
१ डेतेंकिलि॥ यासिक्षमा घे[illegible]उन रव्याति॥ आज्ञाधावि १
आलाप्रति॥ कोपेदळपा[illegible]लु॥ ९४॥ विचारेबोलिला
भरथु॥ गुह्यकरामाचा[illegible]आह्यु॥ याच्यानघेलांचलां
लु॥ युद्धकदनार्थुकरून[illegible]॥ ९५॥ भरथुपुसेगुह्यका
सि॥ तुंकांयुद्धकरूपाहासि॥ येरूह्मणेतुंआलिबळेसि॥
मारूंकांजासिश्रीरामा॥ ९६॥ माह्मास्वामिवनवासि॥ स
बळबळेतुंमारूंपाहासि॥ हेंचिवैरजालातुह्मासि॥ अ

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

1008

लियुध्यासि कारणा॥९७॥ जो सद्गुरूच्या द्वेषु करी॥ तोच
कामच्या मुख्य वैरी॥ त्यासि निवटिन शास्त्रधारी॥ प्रतिज्ञा
खरि हे मासि॥९८॥ जैं कोन गुरु काचा वच्च नायकु॥ रथाव
रून पडला परशु॥ दुःखे गडबडा लोळतु॥ वच्च ने प्राणां
तु कोडवला॥९९॥ परशु [illegible] गुरु कासि॥ वेगी वधिं मज
पापियासि॥ कैं कयाजो [illegible] पापरासि॥ केलों जगासि ज
ति निंद्य॥१००॥ कैंकई [illegible] भाग्यचि थोरी॥ तिने मिं केलों
रामाच्या वैरी॥ तिचे न निंद्य [illegible] पै री॥ दुःख सागरी निमग्न
॥१॥ जो श्रीरामासि स्वयें देषी॥ त्यासि उत्तर लिलिन्ही मसि॥
ते कैकई आज जाचि मसि॥ माझ्या मुखासि लागली॥२॥
ते वोमिं जालों काळमुखा॥ मुख दाखऊं न सके लोकां॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

कैकयादि धलेपर म दुःखा ॥ कोणासि गुह्यकां मिसांगो ॥ ३ ॥
गुह्यकालु सें धरि तो चरण ॥ वेगी सोडुनियां निर्वाणबाण ॥
छेदि मासें देहबंधन ॥ पापपुरस्चरण होईल ॥ ४ ॥ तुं श्रीरामा
चा आलि आप्त ॥ तरि मासा हित सुखा निश्चित ॥ मासा करावा
१० वचनार्थ ॥ प्रायश्चित्तार्थ देह छेदि ॥ ५ ॥ आईकोन परधा
चे वचन ॥ गुहके घातले लोटांगण ॥ मस्तकी धरिले दृढ च १०
रण ॥ पडिले आलिंगन आलिंगनाप्त ला ॥ ६ ॥ दोघासि हि प्रेम
पूर्ण ॥ नयनी स्वानंद जीवन उल्हासोनि गुह्यक जाण ॥
काय आपण बोललु ॥ ७ ॥ श्रीरामि ज्याचि पूर्णभक्ति ॥ तो
मज आप्तु त्रिजगति ॥ तोच्य मासा निज सांघोलि ॥ निशार
णार्थि तयाचा ॥ ८ ॥ गुह्यकालि सांगे सुमंतु ॥ राज्य देता ने

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

घेचि भरथु ॥ राजीअभिषेकाच्या रघुनाथु ॥ वनाअसे
जालु आणाव्या ॥ ९ ॥ जैकोनि सुमंलाचि गोठि ॥ भरथाचे
प्रेम देखोन दृष्टि ॥ गुहकेन्चरणी घालली मिठि ॥ धन्य सृ
ष्टि भरथालुं ॥ १० ॥ गुहक सांघातें घेउन ॥ भरथे केलें सं
ध्यास्नान ॥ करूनियां पि[illegible]पण ॥ गुहकासि आपणापु
सतु ॥ ११ ॥ गंगातिरी ये कि[illegible]ा ॥ श्रीरामे केलि होति वस्ति ॥
शायन केलें कोणे स्थळि [illegible] जप्रलि दाखवलि ॥ १२ ॥ गुह
क जो निषधाधिपति ॥ तेणें भरथु धरूनि हाति ॥ जेथे
श्रीरामे केली वस्ति ॥ त्या स्थळाप्रति आणिला ॥ १३ ॥ श्लोक ॥
एतत दिं गुदीमूलं मेलदेव पललूणां ॥ यस्मिन्समश्र्यसी
लान्यतारांतीशायिलाकुसौ ॥ १३ ॥ टीका ॥ गुहक सांगे भर

(12)

याजवळि॥याचिइंगुदिरक्षाचामुळि॥श्रीरामराहिला
महाबळि॥येगंगाजळिस्नानकेलें॥१४॥येचित्रुणसेजे
रघुनंदन॥सीतसहितकेलेंशयन॥निद्रानकरिचल
क्ष्मण॥बहुप्रार्थनम्योकेलें॥१५॥तोलणश्रीरामसेवास
११ माधान॥नकरिजडमूढश[illegible]॥एकतासरथाआलेरुद
न॥मुर्छापनलोपडिला॥१६॥सारथ्यपडिलामुर्छापन॥श ११
त्रुघ्नपडिलाविसंस॥कौशल्यासुमित्राहुडबडुन॥आल्या
धावोनराजपत्न्या॥१७॥वनवासिचिआलीवार्ता॥तेपोळ
लिदुःखशत्रुघ्नाभरथा॥वनिक्षेमरघुनाथा॥लक्ष्मणासी
तासुखेंआहलि॥१८॥कायवनवासीचिकथा॥वेगीसां
गाविबाभरथा॥दुःखरुदनकरितिमाता॥श्रीरघुनाथा

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

चेनिविरहे॥१९॥ गुह्यक सांगतां करि रुदन॥ ऐव क्षिरा
हिला रघुनंदन॥ श्रीरामसीता केलें शयन॥ ते हें पावन
त्रुणसेज॥१२०॥ वृक्षा वंदितो सिको जा॥ नित्य पूजितो तृ
णाचि सेजा॥ ये थि च्या वंदितां पैर जा॥ श्रीरघुराजा प
दनिष्ट॥२१॥ आई कोन गुह काचि वाणि॥ भरथु लागे
त्याच्याचरणी॥ गुहका धन्य तुं त्रिभुवनि॥ श्रीरा
मभजनि शुद्ध प्रेम॥२२॥ श्रीराम भावें गा संपूर्ण॥ तुं वं
दिसि वृक्ष त्रुण॥ याहि परतें भाग्य कोण॥ सुक्ष्म भज
न निज निष्टा॥२३॥ धन्य धन्य गुहका तुझा भावो॥ तु
ज तुष्टला श्रीरामरावो॥ फिटला देह बुद्धि संदेहो॥ निः
संदेहो राम भजनि॥२४॥ गुह्यक निशाद जाति अपवि

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai joint project of the

(13)

१२ त्र ॥ श्रीराम भजने जाला पवित्र ॥ दिनदयाळ श्रीरामचंद्र ॥
नामे पवित्र महादोषि ॥ २५ ॥ गुहकाचि अनन्य भक्ति ॥ दे
खोन भरथा आति प्रिति ॥ विशाद सांडुनिया चित्तिं ॥ जा
ले सांघाति जीवलग ॥ २६ ॥ श्रीराम सीता कुशसेजार ॥
कौशल्या देखोन साचार ॥ दुःख दाटले दुस्तर ॥ काय
उत्तर बोलिली ॥ २७ ॥ सी[illegible]ल आलि सकुमार ॥ श्रीरा १२
म सकुमारा सकुमार ॥ सुमनसेज खुपे साचार ॥ कु
शसेजार त्यासि देखा ॥ [illegible]रा आन्ले सविलि पवित्र ॥
यालि घांलंघेन लिरात्र ॥ कैकया केले हे चरित्र ॥ सखे
सोवत्र दुःखि केलें ॥ २८ ॥ ऐसिं चाळिलों उपपालि ॥ निमि
शामाजि सरली राति ॥ उदया आलापैं गभस्ति ॥ निशा

१३४

दाप्रति गुह्यक बोलें ॥ ३० ॥ भरथु उतरे लपरपार ॥ नावा आ
णारे सत्वर ॥ घंटापताका सालंकार ॥ मद अरू वार बैस
णीया ॥ ३१ ॥ रथ वाजि हस्ती युक्त ॥ स्तोमे स्तोमे जे थिच्या
लेथ ॥ कटक उतरले समस्त ॥ जालि विस्मित लेणे भरथु ॥
३२ ॥ गुह्यक जो का निशाद पति ॥ नावा घेउनिया हाति ॥ स्व
ये आला भरथा प्रति ॥ क[illegible]नलि आरूढा ॥ ३३ ॥ वशिष्टा
च्या चरणावरि ॥ गुह्यक लोटांगण करि ॥ तुह्मी तारक
भवसागरी ॥ नावें वरि बैसावें ॥ ३४ ॥ वशिष्टे देखोन गुह्य
कासि ॥ निजात्मप्रिति आळंगीयासि ॥ आजि च्या तारक
तुं आह्मा होसि ॥ परपारासि न्यावया ॥ ३५ ॥ गुह्यक ह्मणे
गुरूनाथा ॥ तारक तुसी कृपालता ॥ कृपेन हातुठे स्विमा
या ॥ मिं समस्ता तारिन ॥ ३६ ॥ ऐसिं गुह्यकें बोलतां बाली ॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(15)

वशिष्ठा निजस्तुण पावलि ॥ हरिखें पिटुनियां टाळि ॥ नावेज
वळि तो आला ॥ ३७ ॥ वशिष्ठादि महंत थोर ॥ यासि नाव दिधली
स्वतंत्र ॥ ते नव्हे ति परतंत्र ॥ भवसमुद्रतारक ॥ ३८ ॥ राजप
त्या अतिसकुमार ॥ त्यासि नाव दिधलि थोर ॥ मृदु आय
१३ रूपास परिकर ॥ ते घस[illegible] बैसविल्या ॥ ३९ ॥ भरथ शा
त्रुघ्न नावें वरि ॥ निशान[illegible]लिया भेरि ॥ नानावाजंत्रे
जयजयकारि ॥ परपारि[illegible]लें ॥ ४० ॥ भरथ पुसे गुह्यका १३
ते ॥ सैन्य लावावें कवणें पं[illegible]॥ ता[illegible]णे मियेतो सांघाले ॥ भु
याळा तघेउनिया ॥ ४१ ॥ भरथ गुह्यकाच्या वेवाद ॥ दोघां अ
नुतापे संवाद ॥ येकाजनार्दनि बोध ॥ परमानंद रामकथा
१४२ ॥ इतिश्रीभावार्थरामायणे अयोध्याकांडे एकाकार टीका
यां भरथगुह्यक संवाद गंगा तरणं नाम द्वादशप्रसंगः ॥ १२ ॥

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)

दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८

Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com